
Sanskrita Se Hi Vani Aura Hridaya Ka Sanskara

संस्कृत से ही वाणी और हृदय का संस्कार

Document Information

Text title : Sanskrita Se Hi Vani Aura Hridaya Ka Sanskara

File name : sanskRRitasehIvANIaurahRRidayakAsanskAra.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

संस्कृत से डी वाणी और हृदय का संस्कार



संस्कृत भाषा डी मानव को सचमुच संस्कृत करती
अपने अनुपम संस्कारों से सारा कल्मष डरती । ०
एसके पढने से डी डोता शब्दों का संस्कार,
प्रकृति और प्रत्यय का करती सम्यग् विज्ञेय विचार,
अपशब्दों डे उच्चारण को एसने माना पाप,
अेक वार्ता का भी डे दूषित उच्चारण अभिशाप,
कौन अन्य भाषा डे अैसी शुद्ध भावना भरती ?
संस्कृत भाषा डी मानव को सचमुच संस्कृत करती । १
वाणी की डी भाँति हृदय को भी यड शुद्ध बनाती,
प्रतिडिन दूषित आचरणों से भयना यड सिखवाती,
अेक सत्य डी एसके सारे शास्त्रों का डे ज्ञेय,
भाव-शुद्धि डी एसकी सारी शिक्षाओं का ध्येय
जैसा एसका नाम काम भी वैसा डी डे करती,
अपने अनुपम संस्कारों से सारा कल्मष डरती । २

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskrita Se Hi Vani Aura Hridaya Ka Sanskara

pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

